अमेरिका के अगले राष्ट्रपति

दो साल तक चले प्रचार, दर्ज़नों बहसों, सैकड़ों भाषणों, बहुत से टीवी विज्ञापनों, हज़ारों फोन कॉल, इंटरनेट संदेशों और सीधे संपर्क के बाद अमेरिकियों ने 4 नवंबर को अपने अगले राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और कांग्रेस के दोनों सदनों के लिए नए सदस्यों के लिए मतदान किया।

शिकागो, इलिनॉय में नवनिर्वाचित राष्ट्रपति सेनेटर बाराक ओबामा ने अपना विजयी भाषण दिया जहां जश्न का माहौल था। इससे पहले सेनेटर जॉन मैक्केन ने टीवी पर प्रसारित अपने भाषण में अपनी पराजय स्वीकार कर ली और पहले अफ्रीकी-अमेरिकी के राष्ट्रपति चुने जाने के चलते इस चुनाव की ऐतिहासिक प्रकृति को ज़्यादातर अमेरिकियों की तरह स्वीकार किया। सेनेटर ओबामा के साथ सेनेटर जो बाइडन उपराष्ट्रपति चुने गए हैं। ओबामा की डेमोक्रेटिक पार्टी को प्रतिनिधि सभा और सेनेट में भी सीटों का फायदा हुआ है। कांग्रेस के इन दोनों सदनों में उनका पहले से ही बहुमत था।

बीते दौर को अंगीकार करते हुए और भविष्य की ओर देखते हुए शिकागो पार्क के अपने भाषण में ओबामा ने अमेरिका के बारे में अपनी दृष्टि प्रस्तुत की। उनके भाषण का मूल पाठ यहां प्रस्तुत है:

अगर कहीं किसी को अब भी इस बात पर शक है कि अमेरिका एक ऐसी जगह है जहां सब कुछ संभव है, जिसे लगता है कि क्या हमारे राष्ट्र के निर्माताओं का सपना अब भी जिंदा है, जो अब भी हमारे लोकतंत्र की शक्ति पर सवाल उठाता है, तो आज की रात उसे जवाब मिल गया है।

जे सी. हर्पा © ए.पी.-डब्ल्यू.डब्ल्यू.पी.

नवनिर्वाचित राष्ट्रपति बाराक ओबामा अपनी बेटियों मालिया एवं साशा और पत्नी मिशेल के साथ 4 नवंबर को शिकागो, इलिनॉय में चुनाव की रात एक रैली में।

मार्टिन मेयर्स/एपी © एपी - वर्ल्ड वाइड फोटोज़ एपी

बाराक एवं मिशेल ओबामा और जिल एवं जो बाइडन शिकागो, इलिनॉय के ग्रांट पार्क में ओबामा के विजयी भाषण के बाद मंच पर।

यह उत्तर शालाओं और चर्चों के आसपास लगी लोगों की कतारों ने दिया है, मतदाताओं की इतनी संख्या इस देश ने कभी नहीं देखी, लोग तीन-तीन, चार-चार घंटे मतदान के लिए खड़े रहे, कई तो जीवन में पहली बार मतदान करने निकले थे, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि इस बार बात अलग होगी और उनकी आवाज की वजह से अलग होगी।

यह जवाब जवानों और बूढ़ों, अमीर और गरीब, डेमोक्रेट और रिपब्लिकन, श्वेत, अश्वेत, हिस्पैनिक, एशियाई, मूलवासी अमेरिकी, समलैंगिक और सामान्य, विकलांगों और जो विकलांग नहीं हैं, उन्होंने दिया है। ये वे अमेरिकी हैं जिन्होंने संसार को संदेश भेजा है कि हम कभी भी केवल लोगों का झुंड या लाल और नीले (डेमोक्रेट और रिपब्लिकन) राज्यों का संग्रह भर नहीं रहे हैं।

हम संयुक्त राज्य अमेरिका हैं और सदा रहेंगे।

यही वह उत्तर है जिसने उन लोगों को इतिहास की चाप को मोड़कर एक बार फिर से एक बेहतर दिन की आशा की ओर मोड़ने को प्रेरित किया जिन्हें लम्बे समय से, बहुत से लोग, हम जो हासिल कर सकते हैं, उसको लेकर अविश्वासी, डरे हुए और संदेह से भरे कहते रहे हैं।

यह लंबे समय से चल रहा है लेकिन आज, हमने इस दिन, इस निर्णायक घड़ी, इस चुनाव में जो किया, उसके कारण अमेरिका में बदलाव आया है।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

नवनिर्वाचित राष्ट्रपति बाराक ओबामा का कार्यालय

http://www.change.gov/

अमेरिकी दास्तां

http://www.america.gov/

"अमेरिका को भारत के साथ आतंकवाद की रोकथाम से लेकर एशिया में शांति और स्थायित्व को बढ़ावा देने जैसे बहुत से अहम मुद्दों पर काम करना चाहिए। जो बाइडन और मैं भारत के साथ निकट सामरिक भागीदारी समेत मज़बूत संबंध बनाने को उच्च प्राथमिकता देंगे।"

-सेनेटर बाराक ओबामा, 23 अक्टूबर 2008, इंडिया एब्रोड न्यूज सर्विस इंटरव्यू, शिकागो, इलिनॉय।

कुछ ही देर पहले, आज की शाम मुझे सेनेटर मैक्केन का अद्भुत रूप से गरिमापूर्ण संदेश मिला।

इस अभियान में सेनेटर मैक्केन ने डटकर, लम्बी लड़ाई लड़ी है। और इससे भी ज्यादा कड़ी और लम्बी लड़ाई उन्होंने उस देश के लिए लड़ी है जिससे उन्हें प्रेम है। अमेरिका के लिए उन्होंने ऐसी-ऐसी कुर्बानियां दी हैं जिनकी हम में से ज्यादातर लोग कल्पना तक नहीं कर सकते। इस बहादुर और निस्वार्थ नेता ने जो सेवा की है उसने हमारे जीवन को बेहतर बनाया है।

उस सब के लिए जो उन्होंने प्राप्त किया है, मैं उन्हें और गवर्नर पैलिन को बधाई देता हूं। और आने वाले महीनों में मैं इस देश की आशा को पुनर्जाग्रत करने के लिए उनके साथ मिलकर काम करने को उत्सुक हूं।

मैं इस यात्रा में अपने सहयोगी का धन्यवाद करना चाहता हूं, इस व्यक्ति ने दिल से काम किया और उन लोगों की आवाज बना जिनके साथ वह स्क्रैंटन की गलियों में पला-बढ़ा और डेलावेयर आने-जाने वाली रेलों पर सफर किया, अमेरिका के नवनिर्वाचित उप-राष्ट्रपति, जो बाइडन।

और मैं आज यहां खड़ा हूं तो 16 बरसों से मेरी सबसे अच्छी दोस्त, हमारे परिवार की सुदृढ़ नींव, मेरे जीवन का प्रेम आधार, राष्ट्र की अगली फर्स्ट लेडी, मिशेल ओबामा के ही कारण।

साशा और मालिया, मैं तुम दोनों को इतना प्यार करता हूं कि तुम सोच भी नहीं सकतीं और तुम्हें वह नया पिल्ला ज़रूर मिलेगा जो हमारे साथ व्हाइट हाउस आ रहा है।

और अब वह हमारे साथ नहीं हैं लेकिन मैं जानता हूं कि मेरी नानी मेरे उस परिवार के साथ मुझे देख रही हैं जिसने मुझे वह बनाया जो मैं आज हूं। आज मैं उनकी कमी महसूस कर रहा हूं। मैं जानता हूं कि उनके प्रति मेरा ऋण मापा नहीं जा सकता।

मेरी बहन माया, मेरी बहन अलमा, और मेरे सभी-भाइयों और बहनों, तुम्हारे सहयोग के लिए बहुत धन्यवाद। मैं उनका आभारी हूं।

मैं आभारी हूं अपने अभियान प्रबन्धक डेविड प्लफ़ू का, इस अभियान के अप्रचारित नायक जिन्होंने मैं सोचता हूं कि अमेरिका के पूरे इतिहास का सबसे बेहतरीन राजनीतिक अभियान तैयार किया।

मैं अपने मुख्य रणनीतिकार, डेविड ऐक्सलरॉड का भी आभारी हूं जो पूरी राह ,कदम-दर-कदम ,मेरे साथी रहे।

मैं आभारी हूं राजनीति के इतिहास के सबसे बढ़िया अभियान दल का। आपने यह सम्भव कर दिखाया और मैं सदा के लिए आप का आभारी हूं यह कर दिखाने के लिए जो आपने कुर्बान किया उस सबके लिए ।

लेकिन सबसे बढ़ कर, मैं कभी नहीं भूलूंगा कि यह विजय वास्तव में किसकी है। यह आप लोगों की है। आप लोगों की!

मैं इस पद का सबसे प्रत्याशित प्रत्याशी नहीं था। हमारे अभियान की शुरुआत ढेरों पैसे या बड़े समर्थन से नहीं हुई थी। हमारे अभियान की रूपरेखा वाशिंगटन के सभाकक्षों में नहीं बनी। इसकी शुरुआत तो डेस मॉयनेस के घरों के पिछवाड़ों में, कॉन्कॉर्ड के अगले कमरों और चार्ल्सटन के घरों की ड्योढ़ियों में हुई। इसे उन कामकाजी स्त्री-पुरुषों ने बनाया जिन्होंने अपनी छोटी-मोटी बचत से 5,10, 20 डॉलर की रकम हमारे काम के लिए दी।

हमारे अभियान ने उन युवाओं से शक्ति पाई जिन्होंने अपनी पीढ़ी की उदासीनता के मिथक को रद्द किया, जिन्होंने ऐसी नौकरियों के लिए अपने घर-परिवारों को छोड़ा जिनमें तनख्वाह कम और नींद की फुर्सत और भी कम थी।

इसने उन प्रौढ़ों से शक्ति पाई जिन्होंने ठिठुराती ठंड और तपती गर्मी झेलते हुए एकदम अपरिचित लोगों के दरवाजे खटखटाए, उन लाखों-करोड़ों अमेरिकियों से शक्ति पाई जिन्होंने स्वंयसेवकों और संगठनकर्ताओं के रूप में काम किया और साबित कर दिया कि दो सदी से ज़्यादा समय बाद भी जनता की, जनता द्वारा, जनता के लिए शासन पृथ्वी से उठ नहीं गया है।

यह आप की जीत है।

और मैं जानता हूं कि आपने यह सिर्फ एक चुनाव जीतने के लिए नहीं किया है। और मैं जानता हूं कि आपने यह मेरे लिए नहीं किया है।

आपने यह किया क्योंकि आप आगे आने वाले काम की विराटता समझते हैं। क्योंकि आज की रात जश्न मनाते हुए हम जानते हैं कि कल का दिन जो चुनौतियां लाएगा, वे हमारे जीवनकाल की सबसे बड़ी चुनौतियां हैं- दो युद्ध, संकट में पड़ा एक ग्रह, एक सदी का सब से बुरा वित्तीय संकट।

आज की रात यहां खड़े हम जानते हैं कि हमारे लिए अपने जीवन को खतरे में डालते बहादुर अमेरिकी इराक के रेगिस्तानों और अफगानिस्तान के पहाड़ों में जाग रहे हैं।

ऐसे माता-पिता हैं जो बच्चों के सो जाने के बाद इस सोच में जागते रहेंगे कि मकान की किश्त या डॉक्टर का बिल कैसे दिया जाएगा या बच्चे की कॉलेज की शिक्षा के लिए पर्याप्त बचत कैसे की जाएगी।

नई ऊर्जा है जिसे हासिल किया जाना है, नई नौकरियों का सृजन करना है, नई शालाएं बनाई जानी हैं, खतरों का सामना करना है, गठबंधनों का रखरखाव करना है।

हमारे आगे रास्ता लम्बा होगा। चढ़ाई खड़ी होगी। हम शायद एक बरस में या एक कार्यकाल में वहां तक न पहुंच पाएं। लेकिन अमेरिका, मैं वहां पहुंच पाने को लेकर आज से अधिक आशान्वित कभी नहीं रहा हूं।

मैं वादा करता हूं कि एक देश के रूप में हम वहां पहुंचेंगे।

झटके लगेंगे, गलत शुरुआत हो सकती हैं। बहुत से लोग हैं जो राष्ट्रपति के रूप में मेरे लिए सभी फैसलों या मेरी बनाई सभी नीतियों से सहमत नहीं होंगे। और हम

"अमेरिका-भारत संबंधों को मज़बूत बनाने के लिए राष्ट्रपति क्लिंटन और राष्ट्रपति बुश दोनों ने कई महत्वपूर्ण चीज़ें कीं। मैं दोनों पूर्व अमेरिकी प्रशासकों के किए काम को आगे बढ़ाने के लिए पूरी ऊर्जा के साथ काम करूंगा और दोनों देशों के बीच और भी ज़्यादा निकट सामरिक सहयोग स्थापित करने के लिए आगे बढ़ूंगा।"

-सेनेटर बाराक ओबामा, 21 जुलाई 2008, www.outlookindia.com

नीचे बाएं: बोस्टन, मेसाच्यूसेट्स के एक होटल में ओबामा के समर्थक उनकी जीत पर खुशियां मना रहे हैं।
नीचे दाएं: नई दिल्ली स्थित अमेरिकन सेंटर में ओबामा के कटआउट के साथ फोटो खिंचवाते विद्यार्थी।

पॉल सकेरिया/एपी © एपी - वर्ल्ड वाइड फोटोज़

हेमंत भटनागर

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का बाराक ओबामा के नाम संदेश

5 नवंबर 2008, नई दिल्ली

"अमेरिका का राष्ट्रपति चुने जाने पर आपको हार्दिक बधाई भेजते मैं बेहद प्रसन्नता अनुभव कर रहा हूं। व्हाइट हाउस तक की आपकी विलक्षण यात्रा आपके देश में ही नहीं बल्कि संसारभर के लोगों को प्रेरित करेगी।

© ए.पी.-डब्ल्यू डब्ल्यू पी

भारत और अमेरिका के लोग स्वतंत्रता, न्याय, बहुलतावाद, वैयक्तिक अधिकारों और लोकतंत्र के प्रति अपने साझे समर्पण के बंधन से बंधे हैं। यह आदर्श हम दो राष्ट्रों के बीच मैत्री और रणनीतिक साझेदारी के लिए ठोस आधारशिला उपलब्ध करवाते हैं। हमारे लोगों के बीच मज़बूत सम्बन्ध हैं और मैं आपके साथ भारत और अमेरिका के बीच सहयोग के लिए मौजूद ज़बर्दस्त सम्भावना को साकार करने के लिए काम करने को उत्सुक हूं। वैश्विक समस्याओं और चुनौतियों के समाधान के लिए हम दोनों देशों का मिलकर काम करना विश्व शांति, स्थिरता और प्रगति के पक्ष में एक महत्वपूर्ण घटक होगा।

आशा करता हूं कि आपको जल्द भारत आने का अवसर मिल पाएगा। भावपूर्ण स्वागत आपकी प्रतीक्षा कर रहा है।

अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में आप एक बड़ा उत्तरदायित्व संभालेंगे। इस पद पर सफलता और आपके निजी कुशलक्षेम के लिए मेरी शुभकामनाएं।"

स्रोत: http://pmindia.nic.in/

जानते हैं कि सरकार हर समस्या हल नहीं कर सकती।

लेकिन हमारे सामने खड़ी चुनौतियों को लेकर मैं सदा ईमानदार बना रहूंगा। मैं आपकी बात सुनूंगा, खासतौर पर जब हम एक-दूसरे से असहमत होंगे। और सबसे बढ़कर मैं आपसे राष्ट्र के पुनर्निमाण में उसी तरह हाथ बंटाने को कहूंगा जैसा कि अमेरिका में पिछले 221 बरस से होता आया है- हाथों से पत्थर पर पत्थर, ईंट पर ईंट जमाकर।

21 महीने पहले, कड़े जाड़े में शुरू हुआ सफर पतझड़ की इस रात को खत्म नहीं हो गया है।

हमें जिस बदलाव की तलाश है, वह इस जीत तक ही सीमित नहीं है। यह तो हमारे लिए उस बदलाव को लाने का मौका भर है। और अगर हम जैसा चल रहा था उसी तरह चलने दें तो बदलाव नहीं आ पाएगा।

यह आप सबके बिना, सेवा की एक नई भावना के बिना, बलिदान की एक नई भावना के बिना नहीं हो पाएगा।

तो आइए देशभक्ति, जवाबदेही की एक नई भावना का आह्वान करें, हर कोई हाथ बंटाने और और अधिक मेहनत करने और सिर्फ अपनी ही नहीं, एक-दूसरे की भी देखभाल का फैसला करें।

हमें याद रखना होगा कि इस वित्तीय संकट ने अगर हमें कुछ सिखाया है तो वह यह है कि अगर हमारे कस्बे और छोटे शहर ध्वस्त हुए तो वित्तीय संस्थान भी फलफूल नहीं पाएंगे।

इस देश में हमारा उत्थान या पतन एक राष्ट्र, एक जन के रूप में होता है। हमें उसी गुटबंदी और ओछेपन और बचकानेपन में फिर से पड़ने का मोह छोड़ना होगा जो बहुत लम्बे समय से हमारी राजनीति में जहर घोल रहा है।

हमें याद रखना होगा कि इसी राज्य का एक व्यक्ति पहलेपहल रिपब्लिकन पार्टी का झंडा ह्वाइट हाउस में ले गया था। यह एक ऐसा दल है जिसकी स्थापना आत्मनिर्भरता, व्यक्ति की स्वतंत्रता और राष्ट्रीय एकता के मूल्यों के आधार पर हुई है।

यह हम सब के साझे मूल्य हैं । और आज हालांकि डेमोक्रेटिक पार्टी की एक बड़ी जीत हुई है लेकिन हम इस विजय को विनम्रता और हमारी प्रगति को रोकने वाली खाइयों को पाटने के निश्चय के साथ स्वीकार करते हैं।

जैसा कि लिंकन ने हम से कहीं अधिक विभाजित एक राष्ट्र से कहा था, हम शत्रु नहीं मित्र हैं। भावावेश ने स्नेह के बन्धनों को ताना भले ही हो, हमें उन्हें टूटने नहीं देना है।

और जिन अमेरिकियों का समर्थन अभी मुझे अर्जित करना है- मैं आपका मत भले ही न पा सका होऊं, मै आपकी आवाजें सुन रहा हूं। मुझे आपकी मदद चाहिए। और मैं आपका भी राष्ट्रपति होऊंगा।

आप सब जो दूसरे देशों में, संसदों और महलों में आज का यह समारोह देख रहे हैं, जो संसार के भूले-बिसरे कोनों में रेडियो को घेरे बैठे हैं : हमारी कहानियां अलग-अलग हैं लेकिन हमारी नियति साझी है, और अमेरिकी नेतृत्व की एक नई सुबह शुरू हो रही है।

और वे सब जो दुनिया को चीरने पर तुले हैं: हम आपको हराएंगे। आप सब जिन्हें शान्ति और सुरक्षा की चाहत है, हम आपका समर्थन करते हैं। और वे सब जिन्हें अमेरिका के दीपस्तम्भ के अब भी उतना ही प्रदीप्त होने पर संदेह है: आज की रात हमने एकबार फिर साबित कर दिया है कि हमारे राष्ट्र की सच्ची शक्ति हमारे हथियारों की ताकत या हमारे धन से नहीं, हमारे आदर्शों- लोकतंत्र, स्वतंत्रता, अवसर और अजेय आशा-की दुर्दमय सत्ता से है।

अमेरिका की सच्ची मनीषा है बदल पाने की अमेरिका की क्षमता। हमारे इस राष्ट्र को सर्वश्रेष्ठ बनाया जा सकता है। अब तक की हमारी उपलिब्ध हमें उस सबके प्रति आशान्वित करती है जो हम कल प्राप्त कर सकते हैं और करना चाहिए।

इस चुनाव में कई चीज़ें पहली बार हुईं और कई कहानियां बनीं जो पीढ़ियों तक सुनाई जाएंगी। लेकिन आज की रात मेरे दिलदिमाग पर जो कहानी छाई है, वह उस स्त्री के बारे में है जिसने अटलांटा में मतदान किया। वह काफी हद तक उन करोड़ों लोगों जैसी ही हैं जो इस चुनाव में अपनी आवाज उठाने के लिए कतारों में लगे, एक बात के सिवा: एन निक्सन कूपर 106 बरस की हैं।

वह गुलामी की प्रथा खत्म होने के एक पीढ़ी बाद जन्मी: उन दिनों जब सड़कों पर कारें नहीं थीं और आसमान पर हवाई जहाज, जब उन जैसा कोई दो कारणों से मतदान नहीं कर सकता था- स्त्री होने और अपनी चमड़ी के रंग के कारण।

और आज की रात मैं उन तमाम चीज़ों के बारे में सोच रहा हूं जो उन्होंने अमेरिका में अपनी एक सदी में देखी है- पीड़ा और आशा, संघर्ष और प्रगति, वह दौर जब हमें बताया गया कि हम यह नहीं कर पाएंगे और वे लोग जो उस अमेरिकी लगन पर अड़े रहे: हां, हम कर सकते हैं!

उन्होंने वह दौर देखा जब स्त्रियों की आवाज दबा दी जाती थी और उनकी आशाओं को हंस कर खारिज कर दिया जाता था, और वह भी जब स्त्रियां उठ खड़ी हुईं और बोलीं और मतपत्र के लिए हाथ बढ़ाया। हां, हम कर सकते हैं!

जब देश के औद्योगिक कृषि हृदय प्रदेश में हताशा और देश में आर्थिक मंदी छाई थी, उन्होंने एक राष्ट्र को न्यू डील (नई व्यवस्था), नई नौकरियों, साझे लक्ष्य की एक नई भावना से भय पर विजय पाते देखा। हां, हम कर सकते हैं!

जब हमारे बंदरगाह पर बम गिरे और दुनिया पर निरंकुशता का खतरा मंडरा रहा था तो वह पीढ़ी के महानता की ओर पहुंचने की और एक लोकतंत्र को बचा लिए जाने की गवाह बनीं। हां, हम कर सकते हैं!

वह मोंटगोमरी की बसों, बर्मिंघम की पानी की बौछारों, सेल्मा के एक पुल और अटलांटा के उस धर्मोपदेशक के समर्थन में खड़ी थीं जिसने एक जाति को बताया, ''हम होंगे कामयाब।'' हां, हम कर सकते हैं!

एक मनुष्य चांद पर उतरा, बर्लिन में एक दीवार गिरी, हमारे विज्ञान और हमारी कल्पना ने एक संसार को जोड़ा।

और इस बरस, इस चुनाव में, उन्होंने एक स्क्रीन से अपनी उंगली छुआ कर मतदान किया क्योंकि अमेरिका में 106 बरस बहुत बुरी घड़ियों और बहुत अच्छे दौरों को जीने के बाद वह जानती हैं कि अमेरिका कैसे बदल सकता है। हां, हम कर सकते हैं!

अमेरिका, हमने लम्बा सफर तय किया है। हमने बहुत कुछ देखा है। लेकिन बहुत कुछ किया जाना बाकी है। इसलिए आज की रात हम खुद से पूछें कि अगर हमारे बच्चे अगली सदी देखने के लिए बचे रह पाएं, अगर मेरी बेटियां इतनी खुशनसीब हों कि उन्हें एन निक्सन कूपर जैसी लम्बी जिन्दगी मिले, तो वह कौन सा बदलाव देखेंगे? हमने क्या प्रगति की होगी?

यह अवसर है उन प्रश्नों के उत्तर देने का। यही वह पल है।

यह समय है हमारे लोगों को काम पर लगाने का और हमारे बच्चों के लिए अवसरों के द्वार खोलने का, समृद्धि की पुनर्स्थापना का और शांति को प्रोत्साहित करने का, अमेरिकी सपने को फिर से देखने और उस आधारभूत सच्चाई को फिर से साबित करने का कि हम बहुत से होते हुए भी एक हैं, और जब तक सांस बाकी है, हम आस बनाए रखेंगे। और जब हमारा सामना अविश्वास और संदेहों से होगा, उन लोगों से होगा जो कहेंगे कि हम यह नहीं कर पाएंगे तो हमारा उत्तर वह चिरन्तन लगन होगी जो हमारे राष्ट्र की भावना को प्रतिबिम्बित करती है: हां, हम कर सकते हैं!

धन्यवाद। परमात्मा की कृपा आप पर बनी रहे। परमात्मा अमेरिका पर कृपा बनाए रखे।

वाशिंगटन, डी.सी. के सेनेट कार्यालय में ओबामा। दीवार पर मार्टिन लूथर किंग, जू., अब्राहम लिंकन और मोहनदास के. गांधी की तस्वीरें हैं।

मैथ्यू बाल्स सेंटर © ए.पी.-डब्ल्यू डब्ल्यू